शिक्षा, कौशल विकास और रोजगार के क्षेत्र... 12

माटी की खुशबू हमें देश के प्रति समर्पण का भाव... 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्ष: 14 | अंक: 308
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
मंगलवार | 22 अगस्त, 2023

बकरियों के आहार प्रबंधन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरु

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित दिलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र पर सोमवार को एससी एसपी योजना के अंतर्गत बकरियों के आहार प्रबंधन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ हुआ। जिसमें पशुपालन वैज्ञानिक डॉ.शशिकांत ने बकरी पालन को किसानों के लिए एक लाभकारी व्यवसाय बताते हुए कहा कि यह कम लागत में अधिक मुनाफा देने वाला व्यवसाय है। उन्होंने कहा कि बकरी का दूध औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। नवजात बच्चों को सर्वप्रथम बकरी का ही दूध दिया जाता है। उन्होंने चारे के बारे में बताते हुए कहा कि बकरी को हरा चारा, सूखा चारा और दाना खिलाया जाता है जिसमें हरे चारे का विशेष महत्व है। जिसमें प्रोटीन, खनिज मिश्रण एवं विटामिंस भरपूर मात्रा में होता है। मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि यदि पोषक तत्व फसल को जैविक विधि से दिए जाते हैं तो उत्पादन गुणवत्ता युक्त होता है। वही उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अरुण कुमार सिंह ने किसानों को कम क्षेत्रफल में सब्जी से अच्छा लाभ प्राप्त करने के बारे में बताया। इस अवसर पर केंद्र के शरद कुमार सिंह, राहुल देव , शुभम यादव एवं भगवान पाल सहित लगभग 50 से अधिक किसान मौजूद रहे।

हिन्दी दैनिक

समाज का साथी

कानपुर नगर से प्रकाशित

अंक: 356 कानपुर, मंगलवार 22 अगस्त-2023 पृष्ठ -8

बकरियों के आहार प्रबंधन पर हुआ कृषक प्रशिक्षण का शुभारंभ

नगर संवाददाता

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित दिलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र पर आज एससी एसपी योजना अंतर्गत तीन दिवसीय बकरियों के आहार प्रबंधन पर प्रशिक्षण का शुभारंभ किया गया ।इस अवसर पर पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने बताया कि बकरी पालन किसानों के साथ जुड़ा हुआ एक लाभकारी व्यवसाय है जो कम लागत में अधिक मुनाफा देता है ।उन्होंने कहा कि बकरी को गरीबों की गाय भी कहा जाता है इसका दूध औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। नवजात बच्चों को सर्वप्रथम बकरी का ही दूध दिया जाता है ।उन्होंने बताया कि बकरी को एटीएम मशीन के रूप में जाना जाता है ।बकरी आमतौर पर जंगली झाड़ी और खेत मैदान में घूम फिर कर अपना पेट भरती है ।इसे गाय की तरह 24 घंटा खूंटी से बांधकर अच्छा से अच्छा पोषक चारा देने के बावजूद बांध कर पालना संभव नहीं है। बकरी पालन की तीन विधियां हैं जिसमें चराकर पालना ,दूसरा खूटे पर बांधकर, कार एवं खूंटे पर बांधकर खिला कर पालना। उन्होंने बताया कि बकरियों को मुख्य दो से तीन प्रकार का चारा दिया जाता है जिसमें हरा चारा, सूखा चारा और दाना जिसमें हरे चारे का विशेष महत्व है इसमें प्रोटीन, खनिज मिश्रण एवं विटामिंस भरपूर मात्रा में होता है। उन्होंने बताया कि बकरियों को जंगलीघास,पेड़ पौधों की पत्तियां, फलों,सब्जियों के छिलके के अलावा हरा चारा खेत में जाकर भी दिया जाता है। दलहनी फसलों का विशेष रूप जैसे अरहर का छिलका बकरियों के लिए महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसानों को पोषक तत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी उन्होंने कहा यदि पोषक तत्व फसल को जैविक विधि से दिए जाते हैं तो उत्पादन गुणवत्ता युक्त होता है इस अवसर पर उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने बताया कि फलदार पौधे और सब्जी की खेती से किसान भाइयों को बहुत अधिक लाभ होता है द्य किसानों को इस अवसर पर सलाह दी कि वह कम क्षेत्रफल में सब्जी से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं । केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ राजेश राय ने विश्वविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा चल रही विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी इस अवसर पर केंद्र के शरद कुमार सिंह, राहुल देव , शुभम यादव एवं भगवान पाल सहित आसपास के कई गांव के लगभग 50 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।

सपा 23 से सेक्टर तथा जोनल प्रभारियों को बूथ गठन का प्रशिक्षण देगी

कानपुर । समाजवादी पार्टी कानपुर महानगर के प्रमुख कार्यकर्ताओं की एक आवश्यक बैठक सपा महानगर अध्यक्ष हाजी फजल महमूद की अध्यक्षता में सपा

हिंदी दैनिक

यूपी मैसेंजर

जनता की आवाज

लखनऊ से प्रकाशित

वर्ष : 0

आहार प्रबंधन पर हुआ कृषक प्रशिक्षण का शुभारंभ

यूपी मैसेंजर संवाददाता

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित दिलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र पर आज एससी एसपी योजना अंतर्गत तीन दिवसीय बकरियों के आहार प्रबंधन पर प्रशिक्षण का शुभारंभ किया गया।इस अवसर पर पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने बताया कि बकरी पालन किसानों के साथ जुड़ा हुआ एक लाभकारी व्यवसाय है जो कम लागत में अधिक मुनाफा देता है।उन्होंने कहा कि बकरी को गरीबों की गाय भी कहा जाता है इसका दूध औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। नवजात बच्चों को सर्वप्रथम बकरी का ही दूध दिया जाता है।उन्होंने बताया कि बकरी को एटीएम मशीन के रूप में जाना जाता है।बकरी आमतौर पर जंगली झाड़ी और खेत मैदान में घूम फिर कर अपना पेट भरती है।इसे गाय की तरह 24 घंटा खूंटी से बांधकर अच्छा से अच्छा पोषक चारा देने के बावजूद बांध कर पालना संभव नहीं है। बकरी पालन की तीन विधियां हैं जिसमें चराकर पालना ,दूसरा खूटे पर बांधकर, कार एवं खूंटे पर बांधकर खिला कर पालना। उन्होंने बताया कि बकरियों को मुख्य दो से तीन प्रकार का चारा दिया जाता है जिसमें हरा चारा, सूखा चारा और दाना जिसमें हरे चारे का विशेष महत्व है इसमें प्रोटीन, खनिज मिश्रण एवं विटामिंस भरपूर मात्रा में होता है। उन्होंने बताया कि बकरियों को जंगलीघास,पेड़ पौधों की पत्तियां, फलों,सब्जियों के छिलके के अलावा हरा चारा खेत में जाकर भी दिया जाता है। दलहनी फसलों का विशेष रूप जैसे अरहर का छिलका बकरियों के लिए महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसानों को पोषक तत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी उन्होंने कहा यदि पोषक तत्व फसल को जैविक विधि से दिए जाते हैं ।

उन्होंने बताया कि बकरियों को जंगलीघास,पेड़ पौधों की पत्तियां, फलों,सब्जियों के छिलके के अलावा हरा चारा खेत में जाकर भी दिया जाता है। दलहनी फसलों का विशेष रूप जैसे अरहर का छिलका बकरियों के लिए महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसानों को पोषक तत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी उन्होंने कहा यदि पोषक तत्व फसल को जैविक विधि से दिए जाते हैं ।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 15 अंक : 54 कानपुर, मंगलवार 22 अगस्त 2023 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

बकरियों के आहार प्रबंधन पर किसानों का प्रशिक्षण

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित दिलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र पर आज एससी एसपी योजना अंतर्गत तीन दिवसीय बकरियों के आहार प्रबंधन पर प्रशिक्षण का शुभारंभ किया गया।इस अवसर पर पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने बताया कि बकरी पालन किसानों के साथ जुड़ा हुआ एक लाभकारी व्यवसाय है जो कम लागत में अधिक मुनाफा देता है।उन्होंने कहा कि बकरी को गरीबों की गाय भी कहा जाता है इसका दूध औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। नवजात बच्चों को सर्वप्रथम बकरी का ही दूध दिया जाता है।उन्होंने बताया कि बकरी को एटीएम मशीन के रूप में जाना जाता है।बकरी आमतौर पर जंगली झाड़ी और खेत मैदान में घूम फिर कर अपना पेट भरती है।इसे गाय की तरह 24 घंटा खूंटी से बांधकर अच्छा से अच्छा पोषक चारा देने के बावजूद बांध कर पालना संभव नहीं है। बकरी पालन की तीन विधियां हैं जिसमें चराकर पालना ,दूसरा खूटे पर बांधकर, कार एवं खूंटे पर बांधकर खिला कर पालना। उन्होंने बताया कि बकरियों को मुख्य दो से तीन प्रकार का चारा दिया जाता है जिसमें हरा चारा, सूखा चारा और दाना जिसमें हरे चारे का विशेष महत्व है इसमें प्रोटीन, खनिज मिश्रण एवं विटामिंस भरपूर मात्रा में होता

है। उन्होंने बताया कि बकरियों को जंगलीघास,पेड़ पौधों की पत्तियां, फलों,सब्जियों के छिलके के अलावा हरा चारा खेत में जाकर भी दिया जाता है। दलहनी फसलों का विशेष रूप जैसे अरहर का छिलका बकरियों के लिए महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसानों को पोषक तत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी उन्होंने कहा यदि पोषक तत्व फसल को जैविक विधि से दिए जाते हैं तो उत्पादन गुणवत्ता युक्त होता है इस अवसर पर उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने बताया कि फलदार पौधे और सब्जी की खेती से किसान भाइयों को बहुत अधिक लाभ होता है द्य किसानों को इस अवसर पर सलाह दी कि वह कम क्षेत्रफल में सब्जी से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ राजेश राय ने विश्वविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा चल रही विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी।इस अवसर पर केंद्र के शरद कुमार सिंह राहुल देव शुभम यादव एवं भगवान पाल सहित आसपास के कई गांव के लगभग 50 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।

in to edit and save changes to this file.

अंक-166 कानपुर, मंगलवार 22 अगस्त 2023 पृष्ठ-8

दैनिक

आज का कानपुर

प्रकाशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, महोबा, बांदा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, सुल्तानपुर, अमेठी, बहराइच में प्रसारित

बकरियों के आहार प्रबंधन पर हुआ कृषक प्रशिक्षण का शुभारंभ

आज का कानपुर

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित दिलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र पर एससी एसपी योजना अंतर्गत तीन दिवसीय बकरियों के आहार प्रबंधन पर प्रशिक्षण का शुभारंभ किया गया इस अवसर पर पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने बताया कि बकरी पालन किसानों के साथ जुड़ा हुआ एक लाभकारी व्यवसाय है जो कम लागत में अधिक मुनाफा देता है उन्होंने कहा कि बकरी को गरीबों की गाय भी कहा जाता है इसका दूध औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। नवजात बच्चों को सर्वप्रथम बकरी का ही दूध दिया जाता है उन्होंने बताया कि बकरी को एटीएम मशीन के रूप में जाना जाता है बकरी आमतौर पर जंगली झाड़ी और खेत मैदान में घूम फिर कर अपना पेट भरती है इसे गाय की तरह 24 घंटा खूंटी से बांधकर अच्छा से अच्छा पोषक चारा देने के बावजूद बांध कर पालना संभव नहीं है बकरी पालन की तीन विधियां हैं जिसमें चराकर पालना, दूसरा खूटे पर बांधकर, कार एवं खूंटे पर बांधकर खिला कर पालना उन्होंने बताया कि बकरियों को मुख्य दो से तीन प्रकार का चारा दिया जाता है जिसमें हरा चारा, सूखा चारा और दाना जिसमें हरे चारे का विशेष महत्व है इसमें प्रोटीन, खनिज मिश्रण एवं विटामिंस भरपूर मात्रा में होता है उन्होंने बताया कि बकरियों को जंगली घास, पेड़ पौधों की पत्तियां, फलों, सब्जियों के छिलके के अलावा हरा चारा खेत में जाकर भी दिया जाता है दलहनी फसलों का विशेष रूप जैसे अरहर का छिलका बकरियों के लिए महत्वपूर्ण है इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसानों को पोषक तत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी उन्होंने कहा यदि पोषक तत्व फसल को जैविक विधि से दिए जाते हैं तो उत्पादन गुणवत्ता युक्त होता है इस अवसर पर उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने बताया कि फलदार पौधे और सब्जी की खेती से किसान भाइयों को बहुत अधिक लाभ होता है किसानों को इस अवसर पर सलाह दी कि वह कम क्षेत्रफल में सब्जी से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ राजेश राय ने विश्वविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा चल रही विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी इस अवसर पर केंद्र के शरद कुमार सिंह, राहुल देव , शुभम यादव एवं भगवान पाल सहित आसपास के कई गांव के लगभग 50 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।

ग्राम पंचायतों के सदस्य पद के लिए बिके पंद्रह नामांकन

आज का कानपुर

कुरारा हमीरपुर।विकास खंड क्षेत्र के तीन ग्राम पंचायत में ग्राम पंचायत सदस्य के पद रिक्त होने पर चुनाव सम्पन्न कराने के लिए आज नामांकन पत्र बिक्री का हो गई है। जिसमे गांव के वार्ड एक में दो नामांकन पत्र, वार्ड दो में एक, वार्ड तीन में एक, वार्ड चार में दो, वार्ड पांच में एक , वार्ड छे में एक, वार्ड सात में एक, वार्ड आठ में तीन, हैं। रिटर्निंग ऑफिसर डा हरिशंकर ,सहायक दिनेश चंद्र यादव, ने बताया कि कल से नामांकन पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी।

शांतिभग की तीन

Title-code: UPHIN-48963
E-mail: jksingh.hardoi@gmail.com

सत्य का असर
समाचार पत्र

22,08,2023 jksingh.hardoi@gmail.com मोबाइल 9956834016

एससी एसपी योजना अंतर्गत तीन दिवसीय बकरियों के आहार प्रबंधन पर कृषि विज्ञान केंद्र पर कृषक प्रशिक्षण का हुआ शुभारंभ

पत्रकार जीतेन्द्र सिंह पटेल

पत्रकार जीतेन्द्र सिंह पटेल

कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित दिलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र पर आज एससी एसपी योजना अंतर्गत तीन दिवसीय बकरियों के आहार प्रबंधन पर प्रशिक्षण का शुभारंभ किया गया।इस अवसर पर पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने बताया कि बकरी पालन किसानों के साथ जुड़ा हुआ एक लाभकारी व्यवसाय है जो कम लागत में अधिक मुनाफा देता है।उन्होंने कहा कि बकरी को गरीबों की गाय भी कहा जाता है इसका दूध औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। नवजात बच्चों को सर्वप्रथम बकरी का ही दूध दिया जाता है।उन्होंने बताया कि बकरी को एटीएम मशीन के रूप में जाना जाता है।बकरी आमतौर पर जंगली झाड़ी और खेत मैदान में घूम फिर कर अपना पेट भरती है।इसे गाय की तरह 24 घंटा खूंटी से बांधकर अच्छा से अच्छा पोषक चारा देने के बावजूद बांध कर पालना संभव नहीं है। बकरी पालन की तीन विधियां हैं जिसमें चराकर पालना ,दूसरा खूटे पर बांधकर, कार एवं खूंटे पर बांधकर खिला कर पालना। उन्होंने बताया कि बकरियों को मुख्य दो से तीन प्रकार का चारा दिया जाता है जिसमें हरा चारा, सूखा चारा और दाना जिसमें हरे चारे का विशेष महत्व है इसमें प्रोटीन, खनिज मिश्रण एवं विटामिंस भरपूर मात्रा में होता है। उन्होंने बताया कि बकरियों को जंगलीघास,पेड़ पौधों की पत्तियां, फलों,सब्जियों के छिलके के अलावा हरा चारा खेत में जाकर भी दिया जाता है। दलहनी फसलों का विशेष रूप जैसे अरहर का छिलका बकरियों के लिए महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसानों को पोषक तत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी उन्होंने कहा यदि पोषक तत्व फसल को जैविक विधि से दिए जाते हैं तो उत्पादन गुणवत्ता युक्त होता है इस अवसर पर उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने बताया कि फलदार पौधे और सब्जी की खेती से किसान भाइयों को बहुत अधिक लाभ होता है। किसानों को इस अवसर पर सलाह दी कि वह कम क्षेत्रफल में सब्जी से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं । केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ राजेश राय ने विश्वविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा चल रही विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी।इस अवसर पर केंद्र के शरद कुमार सिंह, राहुल देव, शुभम यादव एवं श्री भगवान पाल सहित आसपास के कई गांव के लगभग 50 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।